मोरंगे
सितम्बर 09

और उसका बच्चा

सुबह निकलता है जो सूरज और उसका
बच्चा

रात को दिखता है जो चाँद और उसका
बच्चा

ये लड़का इनको देख रहा है
झाड़ी में छिपा है जो साँप और उसका
बच्चा

दीवार पर बैठा है जो बिल्ला और
उसका बच्चा

नीम में बैठा है जो मोर और उसका
बच्चा

और यहाँ जीप खड़ी है
और ये हैण्डपम्प है और ये हैण्डपम्प का
बच्चा।

रीना,
उम्र–5 वर्ष, समूह–महक,
जगनपुरा

इस बार

कविताएँ

बबूल
हरी चादर
कितने सारे रंग
और उसका बच्चा
मछली सुहानी
बादल आ जा रे

कहानियाँ

मैं बादलों के गरजने से नहीं डरता
मेरा घर बरसते मौसम में है
रोने वाले राजा–रानी
हरे फूल की खुशबू
मेंढकी और ऊंदरा–ऊंदरी

यादें

गन्ना और चरखी,भट्टी और गरम गुड़
बस्ते में पिल्ला

चर्चा

समय में आया बदलाव

तथा पखेरू मेरी याद के व अन्य स्तम्भ

सम्पादन : प्रभात

सहयोग : भारती, मीनू मिश्रा, कमलेश, दिनेश शुक्ला

डिज़ाइन : शिव कुमार गाँधी
आवरण पर मांडना मदन मीणा के सौजन्य से
प्रूफ़ : नताशा
वितरण : लोकेश राठौर

प्रबंधन मनीष पांडेय सचिव, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
पत्रिका का पता
मोरंगे, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, 3/155, हाउसिंग बोर्ड, स्वाईमाधोपुर, राजस्थान

Email:graminswm@gmail.com
Website:graminshiksha.in
Ph.& fax no. -07462-233057

कम्बख्त उम्र

जीतू गूर्जर, उम्र–10, बादल समूह

झुके हुए बादलों के नीचे बड़े भाया (पिता के बड़े भाई) खेत जोत रहे थे। लीली बादी और खाड़्या नाम के बैल कुड़ी (खेत जुताई के लिए हल से अलग एक उपकरण) खींच रहे थे। कुड़ी की प्आस (कटर) में जब खेत की मिट्टी और खर–पतवार का ढेर लग जाता तो कुड़ी खींचने में बैलों को जोर आने लगता। बड़े भाया उन्हें रोक लेते। कुड़ी को एक सिरे से उठाकर घुटनों से ऊपर पाँव पर धरते। कूड़े का ढेर लगी खेत में गड़ी प्आस ऊपर उठ जाती। अब भाया खरैंटे से मिट्टी और खर–पतवार हटाते। कुड़ी हल्की–फूल हो जाती। बैलों की चाल में फुर्ती आ जाती। यह दृश्य मुझे इतना मनोरम लगता कि मैं सोचता था,–''मैं इतना बड़ा कब हो होऊँगा कि कुड़ी की प्आस से मिट्टी और खर–पतवार हटा सकूँ।'' अब तो न वे कुड़ी न बैल रहे, न बड़े भाया ही, और मैं भी वह दस–ग्यारह बरस का किसान लड़का नहीं रहा। पर उस उम्र के किस्से मेरी यादों में आज भी महफूज हैं।

भाया (पिता) मुझे किसान लड़के के रूप में बड़े होते नहीं देखना चाहते थे। वे मुझे पढ़े–लिखे लड़के के रूप में देखना चाहते थे। यही वजह थी कि वे मुझे खेती–किसानी के कामों में हाथ नहीं लगाने देते थे। और यह दस–ग्यारह बरस की उम्र कम्बख्त ऐसी होती है कि इसमें हर काम को भाग–भाग कर करने की हूक मन में मचलती है। मेरी गाय चराने जाने की इच्छा होती थी, भाया नहीं जाने देते थे। इसका नुकसान यह हुआ कि मैं गाँव के जंगल के डबरों में पानी में तैरती जोंक कभी नहीं देख पाया। वह जोंक जो हमारी भैंसों से चिपककर उनका खून पीती थी। कभी–कभी डबरों में से भैंस निकालकर लाने वाले चरवाहों की पिंडलियों में चिपक जाती थी और इंसान का खून चूसने का लुत्फ़ उठाती थी। और तुलसीदास की इस पंक्ति,''चलहिं जोंक जिमि वक्र गति'' के बिम्ब के लिए मुझे आज भी अनुमान का ही सहारा लेना पड़ता है। क्योंकि जोंक की वक्र गति के अवलोकन का सुख मुझे लेने न दिया गया।

यह उम्र कम्बख्त ऐसी भी है कि जिसमें बच्चे काम तो अच्छा करना चाहते हैं पर हर चीज़ उल्टी पड़ जाती है। गाँव में मकान का काम चल रहा था क्योंकि मकान के नाम पर दो पाटोर ही थी। रहने सोने उठने बैठने के लिए पर्याप्त मकान के अभाव में बाबा शिवाले में सोते थे। बड़े काका गाँव की चौपाल पर सोते थे। काकियाँ, बुआएँ और बहनें पशुबाड़े में सोती थी। इसलिए मकान का काम चल रहा था। मैंने सोचा भाया मुझे गाय चराने तो जाने नहीं देते। खेतों में जाता हूँ तो साँझ पड़े डाँटते हैं। चलो मकान के काम में ही हाथ बटाओ। 'बलम' नाम का बेलदार 'कान्हा' नाम के मिस्त्री को बड़े–बड़े पत्थर सिर पर पर उठाकर पहुँचा रहा था। मैंने सोचा बलम की मदद हो जाएगी, चलो इस पत्थर को उठाते हैं। पत्थर इतना वज़नी था कि मैं दोनों हाथों से उसे उठा नहीं सकता था सो मैंने उसे पलटने का निश्चय किया। पलटने के लिए जैसे ही एक ओर से उठाया, मैंने उसके नीचे साँप को किलबिलाते देखा। मेरी रूह काँप गई। मैंने भाया के डर से किसी को नहीं बताया पर ऐसी बात किसी से छिपती नहीं। भाया के प्रकोप को घर में सब जानते थे। काका–काकी ने सलाह दी,''तू पाटोर में जाकर किताब उठाकर पढ़ने लग जा।'' मैंने ऐसा ही किया। पर भाया तो आ गए। इस डर से कि भाया के गर्म–जलते वाक्य मेरे दिलो–दिमाग की चमड़ी न उधेड़ दे, काका–काकी मुझे बचाने के लिए भाया के पीछे–पीछे ही आ गए। भाया के कुर्ते में चाबी पड़ी थी। जब तक काका–काकी आए, भाया वह चाबी मुझे दे चुके थे और मुझ दस–गयारह बरस के बच्चे से कह रहे थे, ''यह ले इस घर की चाबी। इसे जैसा चलाना चाहे वैसा चला। मैं तो ये घर छोड़कर जा रहा हूँ। कभी ज़िन्दगी में तेरे घर और इस गाँव में पैर नहीं दूँगा।''

मैं एकदम जड़, कुंद, जंग–खाया हो चुका था। काका–काकी मेरा हाथ पकड़ वहाँ से ले गए। भाया सचमुच गाँव छोड़कर चले गए। तीन–चार घंटे बाद गाँव का एक आदमी मुझे माफ़ी मंगवाने के लिए पड़ोस के गाव में भाया के पास लेकर गया। भाया होटल पर चाय पी रहे थे। उनके चेहरे पर अभी भी रोष था। तब मैंने दुबारा ऐसी गलती नहीं होगी ऐसा कहा होगा जिसका मतलब शायद यही रहा होगा कि आज के बाद जीवन में ऐसा पत्थर कभी नहीं उठाऊँगा जिसके नीचे सांप निकले।

भाया के इस विकट भावुक स्वभाव की यह मुझ पर पहली मार नहीं थी। जब मैं दूसरी में पढ़ता था तब की इस घटना से उनके स्वभाव की इस प्रवृत्ति पर और प्रकाश पड़ेगा। एक बार मुझसे तख़त पर स्याही ढुल गई। मैंने सोचा अब क्या करूँ ?मुझे और तो कुछ सूझा नहीं, मैं जल्दी से स्याही को तखत पर ही लीप कर वहाँ से हवा हो लिया। खाट में जाकर चद्दर ओढ़कर सो गया। भाया ने स्कूल जाने के समय में मुझे चद्दर ओढकर सोते हुए देखा तो उनके कान खड़े हो गए। बोले, ''क्या बात है ?मेरा मुँह चद्दर से बाहर ही था और आँखे खुली हुई थीं। मैंने कहा, ''कुछ नहीं।'' बोले, ''सो क्यों रहा है ?'' मैंने कहा, ''नींद आ रही है।'' बोले, ''झूठ बोल रहा है ?'' मैंने कहा, '''नहीं।'' फिर भाया की आँखों की फअकार से मैं एकदम सीधा होकर खाट पर तन कर बैठ गया। भाया को मेरी स्याही में सनी हथेलियाँ दिख गईं। वे बोले, ''प्रतिज्ञा कर।'' मैं शुरू हो गया,''भारत मेरा देश है। समस्त भारतीय मेरे भाई ...।'' डपटते हुए बोले, ''समस्त भारतीय नहीं, मैं कहता हूँ ऐसे बोल।'' मैंने कहा, ''बोलूँगा।'' एक लाइन भाया ने बोली फिर मैंने उसे दोहराया। एक हाथ छाती पर और एक हाथ बाजू के बल सीधी दिशा में रखते हुए

मैंने प्रतिज्ञा पूरी की जो इस प्रकार है –
–मैं प्रण करता हँ कि ...
–मैं प्रण करता हूँ कि ...
–आज के बाद जीवन में कभी ...
–आज के बाद जीवन में कभी ...
–झूठ नहीं बोलूँगा।
–झूठ नहीं बोलूँगा।

घर में हर कोई भाया के गुस्से का शिकार होता था। एक बार हमारी किसी शैतानी पर बाबा ने मुझे और गोपाल (बड़े काका का लड़का जो मुझसे बस छह महीने बड़ा है।) को खूँटी से बाँध कर लटकाया हुआ था। हम दोनों बँधे–बँधे भी स्वतंत्रता सेनानियों की तरह मुस्करा रहे थे। तभी गाँव में आग की तरह फैलती हुई भाया के शहर से गाँव आने की खबर हमारे घर तक आ गयी। किसी ने भाया को पोस्टकार्ड लिख दिया था कि तुम्हारा लड़का गाँव में बहुत दुख पा रहा है। उसे कोई रोटी नहीं देता। दिन भर दर–दर भूख से मारा–मारा फिरता है। कई बार तो हमने रोटी दी है। भाया उन दिनों पोस्टमैन थे। शहर की चिट्ठियाँ छाँटते समय जब उन्हें अपने नाम का पोस्टकार्ड मिला तो वे उसी क्षण पोस्ट–मास्टर से छुट्टी माँगकर दफ़्तरी वर्दी में ही गाँव की ओर आने वाली बस में बैठ गये। भाया के गाँव में आ पहुँचने की आग की लपट बाबा तक पहुँची तो बाबा ने फटाफट हमें खूँटियों से खोल दिया और बाड़े में खड़े–खड़े ऐसे अपनी सफेद मूँछों पर हाथ फेरने लगे जैसे उन्होंने हमें बाँधा ही नहीं था। भाया ने बाबा से ऐसा झगड़ा किया कि हम खड़े–खड़े रोने लगे । बाद में समझ में आया कि यह झगड़ा वास्तव में बँटवारे को लेकर था। भाया अपने भाइयों से अलग होना चाहते थे। भाई भी यही चाहते थे। बाबा ही गाँधी जी की तरह अड़े थे कि बँटवारा न हो, पर वह हुआ।

भाया उसी क्षण मेरा हाथ पकड़कर ले गये। जिस तेज़ी से आग लगी थी उसी तेज़ी से बुझी। रात तक मैं भाया के साथ शहर पहुँच गया। उस दिन का अपने गाँव से निकला हूँ आज तक वापस नहीं लौट पाया हूँ।

बीच–बीच में स्कूल की छुट्टी–छपाटियों में गाँव आना होता था। खेती–किसानी के कामों को करने की ललक शहर में रहकर भी मरी नहीं थी। गाँव आते ही बड़े भाया और बड़े काका के आस–पास मंडराता कि वे कोई काम करने के लिए कह दें। कह दें कि, ''बैलों को पानी पिला लाओ। बछड़े को पकड़कर खूँटे से बाँध दो।'' आदि। वे नहीं कहते तो भी मैं और गोपाल मौका देखकर काम माँग लेते। यह घटना तब की है जब मैं आठवीं में पढ़ता था। एक बार खलिहान से तूड़ा (भूसा) गाड़े (बैलगाड़ी) में भर–भरकर खलिहान से घर उतारा जा रहा था। जाते समय गाड़ा भरा हुआ जाता था आते समय खाली। तो हमने बड़े भाया से कहा,''भाया, गाड़े को खलिहान में हम ले जायेंगे।'' हमारे बहुत ज़िद करने पर बड़े भाया ने इज़ाज़त दे दी। मैं और गोपाल गाड़े पर चढ़ गये और बैलों को हाँकने लगे। बैलों ने देख लिया कि गाड़े में बड़े भाया और काका में से कोई नहीं है। दो अनाड़ी लड़के हैं। वे दौड़–दौड़ कर चलने लगे। मस्ती करने लगे। गाड़ा उचकने लगा। मैं और गोपाल उछलने लगे। बैलों की रस्सी हमारे हाथों से छूट

गयी। हम गाड़े में टिण्डे, टमाटरों की तरह बिखरने लगे। जो बैल दस मिनट में घर से खलिहान तक पहुँचते थे दो ही मिनट में पहुँच गये। गाड़े की घड़घड़ाहट सुनकर खलिहान में खड़े काका ने सोचा कि ये क्या भूचाल आ रहा है! उन्होंने हमें गाड़े में उछलते देखा तो मामला समझ गये। और समझते ही भड़क गये और हमें गालियाँ देने लगे। और कहने लगे, रोको,रोको, बैलों का जेवड़ा कर खींचो। पर हम तो ऐसी हालत में ही नहीं थे। हम तो खुद ही को उछलने–बिखरने से नहीं रोक पा रहे थे। खलिहान में चारा ढोने के दो ढकोले रखे थे। ये ढकोले, ढकोला बनाने वाले ने पन्द्रह दिन में बनाकर दिये थे। उन नए ढकोलों को तोड़ते–रौंदते हुए बैल गाड़े को लेकर उड़ रहे थे। बड़ी मुश्किल से काका ने बैलों को काबू में किया। फिर हमें फटकार लगायी, ''किस बेवकूफ़ ने तुम्हें गाड़ा लेकर भेज दिया। नए ढकोलों का नाश कर दिया। चुपचाप घर जाकर किताब खोलकर बैठ जाओ नहीं तो जान से खत्म कर दूँगा।'' मैं और गोपाल कड़ी फटकार खाया चेहरा लिए घर की ओर चल पड़े।

अजय कुमार , उम्र–11,सागर समूह

प्रभात

खिड़की

मैं बादलों के गरजने से नहीं डरता

जून का तपता हुआ दिन था। उस दिन पाँचवी कक्षा के विद्यार्थी जंगल में घूमने गए।
जंगल सुहाना था। बच्चे वहाँ देर तक खेलते रहे,मज़ेदार किताब पढ़ते रहे। उन्होंने अलाव पर दलिया भी पकायी।

शाम होते ही जंगल के पार काले–काले बादल घुमड़ने और गरजने लगे। वर्षा से बचने के लिए बच्चे चरवाहों की झोंपड़ी की ओर दौड़े। वीत्या भी भागा। लेकिन अचानक बिजली चमकी और बादल ऐसे ज़ोर से गरजा कि वीत्या के होश उड़ गए, वह एक बड़े बलूत वृक्ष के नीचे उकड़ू बैठ गया। उसने आँखें मूँद ली और रुआँसा हो गया। उसने मुँह खोला ही था कि ज़ोर से चिल्ला सके, सहायता के लिए पुकार सके, पर निकट ही उसे वाल्या खड़ी दिखाई दी। वह उसकी सहपाठिनी थी।

'वीत्या, तुम ?ओह, यह तो बड़ी अच्छी बात है कि मैं अकेली नहीं। अब मुझे डर नहीं लगता।'

वीत्या ने चैन की साँस ली और अपने आसपास देखा। मूसलाधार वर्षा में जंगल डूब गया था। अचानक बिजली चमकी, क्षणभर के लिए वृक्ष और झाड़ियाँ नीले प्रकाश से जगमगा उठे। जंगल चीख रहा था, कराह रहा था। नन्हें वीत्या को लगा कि अब दुनिया में उसके और वाल्या के सिवा कोई नहीं है। उसे डरना नहीं चाहिए, यह तो शर्म की बात है।

'डरो मत, वाल्या, वीत्या ने कहा,'मैं गरजते बादलों या कड़कती बिजली से नहीं डरता।' वीत्या ने उसकी सुनहरी चोटी को धीरे से छू लिया। अब उसका भय दूर हो चुका था।

वासीली सुखोम्लीन्स्की
(लेखक की किताब
गाता जाए नन्हा पंख से साभार)

मेरा घर बरसते मौसम में है

एक भालू था। वो गर्मी के मौसम में पानी में तैरने के लिए जा रहा था। उसे बड़ी सी मछली दिखी। भालू उसे पकड़कर खा गया। फिर वो घर जाकर सो गया।
सुबह हो गई। उसे ज़ोर की प्यास लगी। उसे जामुन के पेड़ पर तोता दिखाई दिया पर वह दूर जाने लगा जहाँ नदी है बड़ी। उसे चलते–चलते और प्यास लगी ज़ोर की। फिर उसे नदी दिखाई दी। उसमें बहुत सारा पानी था। उसने जाकर पानी पी लिया। मछली भी खा ली। उसे वहाँ पर एक घर दिखाई दिया। वह उसमें घुस गया। दूसरे दिन बाहर निकला। निकल कर चलने लगा। चलते–चलते थक गया तो उसे जंगल का शेर दिखा। शेर बोला, ''कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारा घर कहाँ है ?''

''मेरा घर बरसते मौसम में हैं।''–भालू ने कहा और चलता रहा।

चाहत, उम्र 5 वर्ष, समूह–रेनबो, सवाई माधोपुर

रोने वाले राजा–रानी

एक राजा था। उसकी एक रानी थी। एक दिन राजा शिकार खेलने गया। खेलते–खेलते उसको रात हो गयी। रानी अफ़सोस करने लगी। राजा धीरे–धीरे आ रहा था। घर आकर पहुँचा तो देखा रानी रो रही थी। राजा ने रानी से पूछा, ''क्या हुआ है ?'' रानी राजा से बोली नहीं। उसकी आँसू भरी आँखें देखकर राजा रोने लगा। रोते–रोते राजा ने रानी से पूछा, ''अरी तू क्यों रो रही है ?'' राजा को इस तरह रोता देखकर रानी हिलकी भर–भर कर रोने लगी। राजा भी फूट–फूट कर रोने लगा।

रिंकू मीणा, उम्र–8 वर्ष, समूह–रिमझिम, जगनपुरा

हरे फूल की खुशबू

एक फूल था। वह हरा था। एक बकरी आई और उस फूल को खाने लगी। फिर एक आदमी आया। उसने कहा, ''तू फूल क्यों खा रही है ?'' बकरी ने कहा, ''यह हरा है और मुझे भूख लग रही है।'' अब बकरी घर आ गयी। घर पर बकरी का दूध काढ़ा गया। दूध में से फूल की खुशबू आ रही थी। फूल की खुशबू वाले दूध की चाय बनायी गई। सबने पी। पर वे समझ नहीं पा रहे थे कि आज चाय में से फूल की खुशबू क्यों आ रही है ?और वह भी हरे फूल की खुशबू।

(यह कहानी **रोशनी** समूह,जगनपुरा के बच्चों ने मिलकर बनायी है।)

हरी चादर

ये हरी–हरी चादर
किसकी है धरती पर

ये नन्हे से कद वाली
है कौन खड़ी धरती पर

फूल खिलाकर रंग–बिरंगे
धरती को करती रंग–बिरंगी

मैं तो कहती हूँ इसको घास
ये उगती है बहुत पास–पास

रात को चाँद की छाँव में रहती
तारों को देखकर खुश हो जाती

मोनिका मीणा, उम्र–13 वर्ष,
समूह–सागर, जगनपुरा

कितने सारे रंग

पेड़ आया
कितने सारे रंग लाया
कितने अच्छे रंग खिल रहे हैं
फूल कितने सुंदर लग रहे हैं
नदी बहती चली आ रही है दूर से
कितनी सुंदर बह रही है नदी
देख रहे हैं कितने सारे आदमी

रामघणी, उम्र 12 वर्ष,
समूह–झील, जगनपुरा

मोनिका मीणा, उम्र –12, सागर समूह

म छ ली सु हा नी

तलैया की रानी
ओ मछली सुहानी
मेरे पास आओ

रंगीन पंखों पे
मुझको बैठाओ
लहरों की सैर कराओ

दिनेश शुक्ला, शिक्षक,
कटार–फरिया

फूल समूह, कटार–फरिया

गन्ना
और चरखी, भट्टी और
गरम गुड़

जब मैं छोटा था। उस समय हमारे घर में दो बैल थे। गाय और भैंसें भी थीं। पिताजी खेतों में बैलगाड़ी लेकर जाते थे। हम सभी बच्चे बैलगाड़ी में बैठकर खेतों पर जाते थे। उस समय वर्षा भी अच्छी होती थी, चारों तरफ़ हरियाली फैली रहती थी। हमारे खेतों के पास ही जंगल था। हम सभी बच्चे जंगल में जाते और वहीं खेलते रहते थे। पेड़ों पर गुलाम–लकड़ी खेलते थे। जब घर जाने का समय होता तो हम वहाँ से भाग कर खेतों में आ जाते और बैलगाड़ी में उछल–कूद करते घर आ जाते थे। तब हमारे गन्ने की खेती होती थी। हम वहाँ रखवाली करते थे और वहीं खेलते थे। जब गन्ने बड़े होते हम खेत से गन्ने तोड़–तोड़ कर चूसते। तब हमारे एक चरखी भी थी। चरखी पर गन्ने पेले जाते थे। मैं चरखी में बैल चलता था। हम सभी बच्चे चरखी के पास ही रहते थे क्योंकि सभी का गन्ने पेलने को जी चाहता था। इसलिए सभी बारी–बारी से पेलते थे। हमारा परिवार बहुत बड़ा था। चाचा–ताऊ आदि सब एक जगह ही रहते थे। हम सभी बच्चे रात में भी वहीं सोते थे। गन्ने का रस पीते और गुड़ बनने का इन्तज़ार करते। गुड़ बनने तक हम भट्टी के इर्द–गिर्द ही घूमते रहते थे। जैसे ही गरमा–गरम खदकता हुआ शहद के रंग का गुड़ चाके में डाला जाता सभी बच्चे उस पर टूट पड़ते। हमारे बाबा कहते, ''अभी रुको अभी गुड़ गर्म है।'' हम चाके में अँगुली डालकर पल–पल में देखते। जैसे ही लगता कि गुड़ कुछ ठण्डा हो गया है, हम सभी चाखे में टूट पड़ते। बाबा छुट्टी दे देते, ''अब जी भरकर खाओ।'' हम सभी भरपेट गुड़ खाते। वह गुड़ बहुत ही स्वादिष्ट लगता था।

फिर गुड़ को मटकी में भर कर सिर पर रखकर घर लाते थे। भेली वाले गुड़ को बैलगाड़ी में रखकर लाते थे। पतला गुड़ सर्दियों में मटकी में जम जाता था और उसमें कतलें पड़ जाती थी जैसे सफ़ेद चीनी हो। उसका स्वाद कमाल होता था।

आज सब उल्टा हो गया है। अब वर्षा भी कम होती है और जंगली जानवरों का भी अधिक खतरा है। इसलिए गन्ने की खेती भी दिखाई नहीं देती है। आज न तो बैलगाड़ी दिखाई देती है, न वे गन्नों के खेत, न वे रस उबालने वाली भट्टियाँ, न वह गरम गुड़। इतना सब कुछ देखते ही देखते बदल गया।

मानसिंह सिर्रा, शिक्षक, बोदल

बस्ते में पिल्ला

मैं कक्षा तीन में पढ़ता था। मेरे साथ चाचाजी का लड़का भी पढ़ता था। उसे कुत्तों को पालने का बड़ा शौक था। मुझे कुत्तों से डर लगता था। उन दिनों हमारे पास के घर में एक कुतिया ने छह पिल्लों को जन्म दिया। उन पिल्लों में एक पिल्ला बहुत अच्छा था। उसका रंग भूरा था। उसके बाल बड़े–बड़े थे। दिखने में रीछ जैसा दिखता था। चाचाजी के लड़के ने उसे पालने का फ़ैसला कर लिया। मैंने उससे कहा कि ''मां इसे नहीं पालने देगी।'' उसने मेरी इस बात की कोई परवाह नहीं की। मैंने माँ को बताया। माँ हमसे लड़ने लगी। पर उस भाई की समझ में कुछ नहीं आया। वह बेपरवाह रहा। वह सुबह चार बजे पिल्ले को ले आता और अपने पास सुला लेता। कई बार अपने बस्ते में पिल्ले को रख कर ले जाता। एक दिन वह पिल्ले को जहाँ छोड़कर गया था, वहाँ उसे नहीं मिला। वह उसे पागलों की तरह यहाँ–वहाँ ढूँढने लगा। उस पिल्ले को एक लड़का ले गया था। उसने उस लड़के को बहुत बुरा–भला कहा और कहा कि ''आज के बाद हाथ मत लगाना।'' फिर उसने पिल्ले को अपने गले से लगा लिया। माँ ने कहा, ''अगर तू इस पिल्ले को घर लाया तो तेरी खैर नहीं।'' तो वह बोला, ''अगर यह घर में नहीं रहेगा तो मैं भी चला।'' माँ हँस कर बोली,'' मैं तो यह देख रही थी कि तू इसे कितना चाहता है।''

धीरे–धीरे सभी घर वाले उस पिल्ले को चाहने लगे। उसे खिलाने लगे। सब उसे टाइगर, टाइगर कहते। वह सबको खूब हँसाता। एक दिन वह बाहर घूम रहा था तो एक ट्रक उसे टक्कर मार गया। पिल्ला मर गया। उस दिन मेरी माँ, मेरा भाई और मैं बहुत रोये। घर में किसी ने खाना नहीं खाया। घर के सदस्य की तरह उसकी याद आती है।

बालकृष्ण शर्मा, शिक्षक, बोदल

बादल आजा रे

बादल आजा रे
बादल आजा रे
अरे आ जा बादल आजा
म्हारा मन को धीर बँधा जा
अम्बर में दरस दिखा जा
म्हारा माथा ऊपर छाजा
बादल आजा रे, बादल आजा
रे

कुँआ बावड़ी सारा सूख्या,
ट्यूब–वैल भी सूख्या
जन का मन का रूँख
झुलसग्या
मोर्याँ बोलै बन का
सबर बँधा जा रे ...

बाट जोहता बारह महीना
म्हारा यूँ ही कडग्या
खेती छूटी,पशुधन बिगड़ग्या,
घूमत गोडा कुड़ग्या
आस पुरा जा रे,
बादल आ जा रे ...

रामसिंह मीणा, शिक्षक,
जगनपुरा

(इस अंक की कई रचनाओं में बारिश, हरियाली,नदी आदि के सुखद विवरण हैं। यह बारिश के सुख और सौंदर्य को याद करने की तरह है। मगर राजस्थान के अधिकांश इलाके बारिश की आस करते ही रह जाते हैं और उन इलाकों के निवासियों और पशु–पक्षियों,खेतों और जंगलों को पानी के बिना दुख उठाने पड़ते हैं। इस गीत में यही अनुभव दर्ज हुआ है।)

कर्मा मीणा, उम्र –10, सागर समूह

समय में आया बदलाव

समय में आए बदलाव पर यह चर्चा बादल समूह,बोदल में की गई। बदलाव को वे कैसे देखते हैं, इस पर कुछ बच्चों की बातें यहाँ प्रस्तुत है–

जिनके भैंस दूध देती है। वो लोग भी अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाते हैं। सारे दूध को बेच आते हैं। बाजार के लोग दूध वालों से दूध खरीदकर अपने बच्चों को पिलाते हैं।

–बलवीर गुर्जर

बस तो साठ वर्ष पहले भी थी लेकिन लोगों के पास पैसे नहीं थे। इसलिए वे बस में नहीं बैठते थे और पैदल ही दूसरे शहर में चले जाते थे।

–जितेन्द्र गुर्जर

पहले के लोग चाय नहीं पीते थे। नाश्ते में एक मटकी राबड़ी पी जाते थे। दिन भर काम करते थे।

अनूप मीणा, उम्र –12, सागर समूह

जिनके भैंसे हैं उनको दूध नहीं मिलता जो भैंसों को नहीं जानते उनको दूध मिलता है। बच्चे कहते हैं, ''मम्मी दूध वाला आ गया क्या ?'' मम्मी कहती है, ''आजा बेटा दूध गरम हो गया।'' सी–सी करके पी जाते हैं। मम्मी से कहते हैं, ''थोड़ा दूध और है क्या ?''

–रणवीर गुर्जर

पहले बरात चार–चार दिन रुकती थी अब तो रातों–रात विदा कर देते हैं। क्योंकि अब लोग शराब पी–पी कर गाली गलौज करते हैं। और लाडा–लाडी एक दिन पीछे आते हैं क्योंकि रात में ट्रोली पलटने का धोखा रहता है।

–राजेन्द्र गुर्जर

बात लै चीत लै

मेंढकी और ऊँदरो–ऊँदरी

एक मेंढकी, एक ऊँदरी और एक ऊँदरो छो। एक दिन ऊँदरो पटेलाँ में जा बैठ्यौ। ऊँदरी ने मेंढकी से कही, ''जा राजा को बुला ला।'' मेंढकी कागलों से छुपती–छुपाती राजा नै बुलाबा गयी। जार बोली–
''कोटा काटण रूई बलोचण,
चलो राजन जी काँसो तैयार हो र्‌योअ।''

पटेल बोल्यो, ''रुको–रुको राणी सा काँई केरी है ?''
मेंढकी बोली–
''कोटा काटण रूई बलोचण,
चलो राजा जी काँसो तैयार हो र्‌योअ।''

ऊँदरा–राजा न कह्यो, ''रूक जा री जाबर पीटी, जरख खावणी!''
मेंढ़की सरपट्या मारती फुदकती सूदी घर न आगी। घबराट करती बोली, ''
राणी सा मोकू दुबाड़ दे।''
ऊँदरी कही, ''छाणा का परेण्ड्या में दुबड़ जा।''

अब पटेलां में बैठ्या ऊँदरा राजा नै बुलाबानै ऊँदरी राणीसा स्वयं ही पधारी। पटेलाँ में बैठ्या ऊँदरा सूँ बोली–

''कण्या कटारो नौ सौ को
फूँदौ लट्कै दो सौ को
घराँ न चालौ राजाजी काँसौ त्यार छै।'
ऊँदर–राजौ बोल्यौ–
''धूप पड़ै छै, पगल्या दादै चाल सुन्दर चाल मुं बार आर्योऊँ।''

ऊँदरी घर नै आगी। ऊँदरौ भी आग्यौ। ऊँदरी पाणी को लोट्यौ लेर खड़ी होगी। बोली, ''अजी पैली हाथ धोल्यो नै।''

ऊँदरौ बोल्यौ नहीं री म्हारी उजड़दन्ती मुँ बार हाथ न धोऊँ। पैली वा मेंढ़की नै बता। घबराट की मारी ऊँदरी कह दी, ''छाणा का परेण्डा में दबरी होयगी।''
ऊँदरौ लाग्यौ छाणा नै उठा–उठा र फेंकबा। एक छाणा कै नीचै मींढकी कढी।

पैली तो मींढकी की टाँगड़ी पकड़र फैंक दी। फेर कन्नै जार पूछ्यौ, ''अब या बता तू मोसूँ पटैलाँ में जार कोटा काटण रूई बलोचण किस्याँ कही।''

''या निठौरी जीभ फिसलगी, राजाजी, अब न कहूँ।'' मींढ़की नै विनती करी।
''ठीक छै।'' कह र ऊँदर–राजो पाणी लेर खड़ी राणी पै सूँ झारी लेर हाथ धोर काँसौ खाबा लाग्यौ।

ऊँदरी जीमता हुया राजाजी कै पास बैठी र्‌ही और मींढ़की औलाणी में बैठी–बैठी टम्मक–टम्मक झाँकती र्‌ही।

किरण, उम्र–8 वर्ष, समूह–तारा, कटार–फरिया

हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

नीचे दी गई कविता पँक्तियां कर्मा, धर्मराज, मनराज (सागर समूह) आदि बच्चों की हैं। इनमें जिन पँक्तियों पर भी चाहो कविता आगे बढ़ाओ और पूरी करके मोरंगे को भेजो।

मौजी–फ़ौजी
मैं झूले पर खा रही थी मौजी
तभी उधर से निकला एक फ़ौजी।

रुक जा गाड़ी
छुक–छुक करती आई गाड़ी
मोहन बोला रुक जा गाड़ी।

क्यों
फूलों के रंग क्यों हज़ार ?
धरती क्यों हरी,क्यों लाल ?

श्रीमोहन मीणा,
उम्र –11, सागर समूह

अधूरी–बात
नीचे दो अधूरी कहानियाँ दी जा रही हैं। इनमें से किसी भी कहानी को पूरा करके भेज सकते हो। चाहो तो दोनों को भी। एक कहानी **विनोद** ने शुरू की है और दूसरी **रामराज नायक** ने। दोनों बच्चे बादल–समूह, बोदल से हैं।

एक
एक पेड़ था। उसके नीचे एक औरत बैठी थी। एक बकरी आई। बकरी ने कहा–''बहन, तुझे क्या दुख है ?'' औरत बोली–''बकरी बहन, मुझे क्या भी दुख नहीं है।'' कृ

दो
एक बार एक राजा था। उसका किला जंगल में था। उस राजा का नाम हमीर था। हमीर बलवान और वीर था। वह जब शिकार करने जाता तो शेर का शिकार करता था।

हमीर ने अपने किले में शेर की खाल लटका रखी थी। वह खालों को विदेशों में बेचता था।

फिर एक बार हमीर शिकार करने गया। उसने देखा कि शेरनी और शेर अपने बच्चों के साथ खेल रहे हैं। ...

जुलाई अंक में छपी पहेलियों के जवाब

1 नारियल 2 किसान और बैलगाड़ी 3 अंगुलियाँ,दाँत, जीभ और पेट 4 खाट 5 रई–बिलौनी 6 मिर्च 7 चूहा 8 चक्की 9 केलू 10 ताला–चाबी

अगस्त अंक में छपी कुछ पहेलियों के जवाब

1 चक्की 2 खाट के पाए 4 दीपक 5 ताकड़ी (तराजू) 8 आँखें

(शेष के जवाब बच्चों से पूछ कर अगले अंक में छापेंगे क्योंकि फिलहाल जवाब संपादक को भी पता नहीं।)

माया मीणा, उम्र –13, सागर समूह

अगस्त अंक में दी गई दो पँक्तियों को आगे बढ़ाते हुए बच्चों ने ये कविताएँ लिखी हैं–

मोर डूँगरी की पगडण्डी
जंगल में पोन लगै ठण्डी

1
मोर नाचती फिरती है
घनघोर घटाएँ घिरती है
भीनी भीनी खुशबू उड़ती
तितली गाती फिरती है

2
मीठे–मीठे बेर की झाड़ी
बच्चे देख बजायें ताली
हरी दूब में हिरनें फिरती
फिरते शेर शेरनी हैं
वाह री! प्यारी पगडण्डी
तोमैं भैंस चरे कोई–कोई बण्डी

3
मोर डूँगरी में बाड़ी है
जिमैं लोगबाग बोवे भिण्डी
भिण्डी की सब्जी खा–खाकर
छाछ पियै ठण्डी–ठण्डी

4
मोर डूँगरी की पगडण्डी
थारी पौन सू आवै निंदड़ली
तू सबको लागे प्यारी
थारी पौन में नाचू भारी
तू तो है सबसू ही न्यारी
प्यारी पगडण्डी

5
मोर डूँगरी का छोरा–छोरी
खाणा में खावे है मच्छी
सोवे पेड़ के नीचे उनको
हवा लगै भारी अच्छी

6
मोर डूँगरी की पगडण्डी
आती है मेरे आँगन में
आँगन से फिर ले जाती है
खेत में खलिहान में

7
मोर डूँगरी का दूधिया
क्यों भूल जाय या पगडण्डी
मोर डूंगरी का छोरा–छोरी
क्यों खावै रे रोटी ठण्डी

8
मोर डूँगरी की पगडण्डी
जंगल में पौन लगै ठण्डी
बंदर कै पीछै शेर पड्यौ
बंदर की पूंछ हो गई बण्डी

9
मोर डूँगरी की पगडण्डी
जामे घूमे राजा पाखण्डी
राजा खाली हाथ चलै
रानी के सिर पर दो हण्डी
ऐसे राजा की पिटाई को
एक कौआ ले आया डण्डी
राजा ने देखी जब डण्डी
हो गई अकल उसकी ठण्डी
मोर डूंगरी की पगडण्डी
जंगल में पवन लगे ठण्डी

(ये कविताएँ क्रमशः इन्होंने लिखी है–
1 वाटिका समूह 2 नाम नहीं 3 विनोद प्रजापत, समूह–सूरज 4 जितेन्द्र गुर्जर, 5 बलबीर गुर्जर 6 राजेन्द्र गुर्जर 7 रेखा गुर्जर 8 हरिसिंह गुर्जर 9 निरमा प्रजापत। इनके अलावा इन बच्चों ने भी कविताएँ भेजीं जो जगह की कमी की वजह से नहीं दी जा सकी हैं–सुरेश, अनिता, नरेश गुर्जर, हरबीर गुर्जर और रामराज। दो के अलावा सभी बच्चे बादल–समूह,बोदल से हैं।)

मण्डी में ठण्डी

धीरै–धीरै आज्यौ आँपा
कोनी चलाँ सब्जी–मण्डी
पड़ रही ठंड कड़ाके की
मण्डी में लग जायगी ठण्डी
मोर डूँगरी की पगडण्डी
जंगल में पौन लगै ठण्डी
श्रीमोहन मीणा, 12 वर्ष,सागर समूह

सौरभ पण्डी

मोर डूँगरी की पगडण्डी
जिसमें जा रहा था सौरभ पण्डी
सौरभ को मिला रास्ते में मोती
मोती ने सौरभ की खींची चोटी
सौरभ ने मोती को मारी डण्डी
मोर डूँगरी की पगडण्डी
जंगल में पवन लगे ठण्डी

कर्मा मीणा, उम्र 10 वर्ष, समूह–सागर

मोर डूँगरी की पगडण्डी

पगडण्डी जंगल के अन्दर
जिसमें मिलते भालू बन्दर
शेरों की दहाड़ जब गूंजे
उड़ जाते तालों के चूजे
मानसरोवर ताल है सुंदर
जिसमें नावें और भी सुंदर
नावों में बच्चे जब बैठें
जल में खूब मछलियां देखें
कई मछलियाँ पूँछों वाली
कई मछलियाँ मूँछों वाली
लेकिन मई मछलियां बण्डी
रे भाई
मोर डूँगरी की पगडण्डी
जंगल में पवन लगे ठण्डी

वेणी प्रसाद, शिक्षक, बोदल

जुलाई की मोरंगे पर मिली चिट्ठियाँ

मोरंगे बच्चों के लिए उपयोगी साबित हो सकती है क्योंकि जो प्रारूप इसमें सामने आया है वह बच्चों की कल्पना और सृजनात्मकता को काफ़ी उद्दीप्त करने वाला है। बच्चे इसे प्यार करने लगेंगे। आपने जिन स्थायी स्तम्भों को पत्रिका के लिए चुना है उन्हें काफी सूझबूझपरक माना जा सकता है। मीनू मिश्रा का संस्मरण हृदयस्पर्शी है और राजेश कुमावत की कविता भी अच्छी है।
सुरेश पण्डित, लेखक एवं समाजकर्मी, अलवर

बच्चों और शिक्षकों की रचनाधर्मिता को जाग्रत करने का यह अनूठा प्रयोग है। पिछड़े इलाकों के ग्रामीण स्कूलों में यह प्रयोग अनिवार्य प्रवृत्ति के रूप में लागू हो यह वांछनीय है।
पथिक वर्मा, अरावली उद्घोष,उदयपुर

मोर के मोरंगे कविता मुझे अच्छी लगी। **पखेरू मेरी याद** के संस्मरण की भाषा व शब्द इतने स्पष्ट और मार्मिक हैं कि जैसे–जैसे पाठक आगे बढ़ता है रेखाचित्र आँखों के सामने होता है। **विनोद का जन्मदिन** कहानी अच्छी लगी। दस वर्ष की उम्र में इतनी सुंदर कहानी जिज्ञासा उत्पन्न करने वाली है। **पढ़ने के लिए तो अपने स्कूल ही आना था** संस्मरण अच्छा लगा। **हैलपर उतर कर आता** कविता में गांव के वातावरण में संध्या को सजाया गया है। औजू पूछूँगौ छात्र व शिक्षिका के संबंध को स्पष्ट करते हुए है।
मोनिका शर्मा, शिक्षिका, बोदल

चीनू के द्वारा लिखी कहानी मुझे अच्छी लगी। मनराज मीणा द्वारा लिखी **विनोद का जन्मदिन** मुझे बहुत मार्मिक लगी। **नीम का पेड़** बहुत अच्छी लगी। पूरी तरह से देखा जाए तो मोरंगे मुझे बहुत खूबसूरत लगी। परंतु इसमें प्रूफ की काफ़ी गलतियाँ मिलीं। राजेश कुमावत की **हैलपर उतर कर आता,** विजयसिंह जी की **मन के ढोल** अच्छी लगी। **मीनू मिश्रा**, शिक्षिका, सवाईमाधोपुर

मोरंगे पढ़कर अत्यन्त खुशी हुई बच्चों की रचनाओं को एक और मंच मिलेगा। इससे निश्चित तौर पर बच्चों की रचनात्मकता को एक गति और उत्साह मिलेगा जिससे बच्चों के बीच एक साहित्यिक माहौल तैयार हो सकेगा। अटल मीणा की कविता सचमुच मन को छूने वाली है। इसमें एक प्यारा सा वर्णन मोर का किया है। मनराज मीणा ने विनोद का जन्मदिन में माँ–बाप के दर्द को दिखाया है। रंजीता के **ओजू पूछूँगौ** में शिक्षिका व गाँव के बच्चों के बीच आत्मीय लगाव का वर्णन दिल को छूता है। मीनू मिश्रा के संस्मरण में बच्चे का भोलापन व लगाव दिखाई दिया। पत्रिका में बच्चों के वैज्ञानिक वार्तालाप प्रयोगों को न देखकर निराशा हुई। गाँव के क्षेत्रीय गीतों को शामिल किया जाए तो ज़्यादा अच्छा रहेगा। **दुर्गा प्रसाद**, शिक्षक, जगनपुरा

और भी कई बाल–पत्रिकाएँ पढ़ी जिनमें मोरंगे मुझे अलग दिखाई दी। कविताओं में मुझे **मोरंगे, नीम का पेड़, मन के ढोल** काफ़ी अच्छी लगी। अच्छा लगने का कारण है इनकी शब्द रचना। मोरंगे में मोर की सुंदरता का वर्णन,नीम का पेड़ बचपन की याद दिलाता है और मन के ढोल आंखों के सामने गाँव का दृश्य लाते हैं। **विनोद का जन्म दिन** कहानी मन को छूने वाली रचना है। लोककथा **मैं घर के ऊपर से होकर आऊँगा** में गुर्जर द्वारा की गई बेईमानी का फ़ैसला सियार ने तर्कपूर्ण तरीके से किया। प्रभात जी का संस्मरण मुझे काफ़ी अच्छा लगा जिसे पढ़कर मुझे भी जंगल की यात्रा करने की इच्छा हो आई। मीनू जी की रचना में एक बच्चे के प्रति उनका लगाव देखकर लगा कि हम कभी–कभी किसी से इतना जुड़ जाते हैं उनसे बिछुड़ना दुखदायी लगता है। **रेणू गुर्जर,**शिक्षिका,कटार–फरिया

मेरी उम्र 10 वर्ष है और मुझे यह **मोरंगे** बहुत अच्छी लगी है। आपको इस **मोरंगे** पर बहुत–बहुत धन्यवाद।
विक्रम मीणा, **मनकेश मीणा**, सागर समूह

मानसिंह व फोरसिंह में मानसिंह जो अपने मुँह से कहता है तो उसके चेहरे को देखते ही, कहने से पहले ही, सामने वाला व्यक्ति हँस जाए क्योंकि उसका कहने का कुछ तरीका ही ऐसा है। मुझे उसके बात को कहने का तरीका बहुत अच्छा लगा है। **अशोक शर्मा**, शिक्षक,कटार–फरिया

मुझे **मोरंगे** देखकर बहुत प्रसन्न्ता हुई। जितने सुंदर मोरंगे दिखते हैं उतना ही सुंदर इसका नाम है। **विनोद का जन्मदिन** कहानी व **नीम का पेड़ कविता** मुझे बहुत अच्छी लगी। **भारती शर्मा,** शिक्षिका, बोदल

ओजू पूछूँगौ रचना में एक ऐसा ग्रामीण बच्चा है जो साफ़–सुथरा होकर स्कूल नहीं आ पाता। शिक्षिक के कपड़ों से नाक पौंछ देता है। लेकिन शिक्षिका उस बच्चे को उतना ही प्यार देती है जितना अन्य बच्चों को और इसी प्यार को महसूस करते हुए बच्चा यहाँ तक कह देता है कि **ओजू पूछँगौ** । दूसरी बात यह कि शिक्षिक उसे अपने घर से एक रुमाल लाकर देती है। **विनोद का जन्म दिन** कहानी में विनोद नाम का लड़का जन्म लेकर मर जाता है। लेकिन उसके माँ–बाप अपने सूने मन को सांत्वना देने केलिए उसका जन्म दिन मनाते हैं। **मिश्का का दलिया** कहानी में बच्चा दलिया बनाना नहीं जानता लेकिन कोशिश करता है।
रामसिंह,शिक्षक,जगनपुरा

पखेरू मेरी याद के अच्छी लगी क्योंकि प्रभात का काका किसानों से बात करता है तो उसको बुरा लगता है। और जब वह जूते में पैर घुसाता है तो उसको अच्छा लगता है।
पहाड़ी पर जाकर चाचा अपनी गायों को पुकारता है और गायें आ जाती हैं। गाय का लीली कहते ही दौड़े चले आना और रम्भा कर आने की सूचना देना अच्छा लगा।
अनूप मीणा, **अजय कुमार सैनी**, **श्रीमोहन मीणा**, **कर्मा मीणा**, सागर समूह

कौवा और कौवी की खेती की कहानी अच्छी लगी क्योंकि उसमें दोनों ने गेहूँ की खेती की थी। और गेहूँ बेचा तो पैसे आए। कौवा और कौवी की खेती में हमने यह पढ़ा कि वे चूहा से पूछने लगे कि हम क्या काम करें ?और बारिश नहीं बरसी तो कौवे ने चोंच से कुँआ खोदा। **धर्मराज सैनी**, **रामहरि सैनी,** सागर समूह

औरत और शेर की कहानी में मुझे बुरा लगा कि औरत शेर से खेती करवाती थी। रंग–बिरंगी मींडकड़ी अच्छी लगी। हलवाई का कमरा में बंदर को ठीक जलेबी सा घुमा दिया था। यह तो मुझे बिल्कुल बुरा लगा है। **मैं भी साथ चलूँगा पापा** में देख उसका मासूम चेहरा मेरी आँखें भर आई। **दादाजी का दस्ताना** मुझे बिल्कुल बुरी लगी। मैं इसके बारे में नहीं लिखूँगी। **प्रियंका मीणा**, सागर समूह

मोरंगे मुझे बहुत अच्छी लगी है। आप कहते हैं कोई कविता या कोई कहानी लिखो।मैंने बहुत सारी कविताएँ और कहानियाँ लिखी हैं। लेकिन मेरी कविताएँ और कहानियाँ आप तक पहुँची हैं या नहीं यह तो मैं नहीं जानता लेकिन मेरी कहानी आप तक पहुंची हो तो वह **मोरंगे** में क्यों नहीं आई ?
रामराज नायक, समूह–बादल

मानसिंह ने शेर की बात बतायी यह अच्छी लगी। **क्या खाऊँगा** कहानी बुरी लगी क्योंकि एक पुरूष ने एक स्त्री के कुदाली दे मारी। यह बुरा लगा कि प्रभात जी हमारे यहाँ दो बार ही आए हो।
राजेन्द्र गुर्जर, समूह बादल

गुर्जर और ठाकुर की कहानी अच्छी लगी। पहलेलियाँ अच्छी लगी। **मोरंगे** तो छापते हो लेकिन हमारे साथ काम तो कभी नहीं किया है। **हरबीर गुर्जर**, समूह बादल

बबूल

आप हैं
हरे–भरे
लेकिन
लम्बे नज़र
आते हैं
ज़रा

आप देते हैं
हमें छाया
और ठण्डक
आप
लहर–लहराते
हैं ज़रा

आपकी चादर
हरी–भरी
आप उसे
ओढ़े रहते
आपके
पीले–पीले फूल
फिर फल
हमें लुभाते हैं
ज़रा

आप हैं
हरे–भरे
लेकिन
लम्बे नज़र
आते हैं ज़रा

रीना मीणा,
12 वर्ष,
सागर–समूह,
जगनपुरा